International Journal of Advanced Educational Research
ISSN: 2455-6157
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.org
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 180-181

कवि श्यामलाल उपाध्याय की कविताओं में राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना

उपासना
सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गौड़ ब्राह्मण महाविद्यालय, हरियाणा, भारत।

प्रस्तावना

21वीं शती के महान कवि श्यामलाल उपाध्याय का हिन्दी साहित्य में उदात स्थान है। वे राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक काव्य के उपासक थे। उन्होंने भारतीय संस्कृति का अपने काव्य के माध्यम से जन-जन को संदेश दिया। उनके हृदय में राष्ट्रीयता की गंगा प्रवाहित है। वे कहते है कि "सभी सुखी सानन्द हो, सब स्वस्थ हो सब निरोगी हो।"[1]

कवि श्यामलाल उपाध्याय जी ने माता शारदा की वंदना का गुणगान अपने काव्य संग्रह नियति-निसर्ग के प्रथम चरण में किया। उन्हें वेद वीणा आदि के आधार पर माता सरस्वती की वंदना की। क्योंकि माँ शारदा विद्या ज्ञान की देवी है। इसी बीच उनके हृदय से जो गुणगान माँ शारदा के प्रति निकला वो इस प्रकार से है -

जननी है तू वेद की, वीणा पुस्तक हाथ।
सुविशाल तेरे नयन, जनमानस की माथ।।
सर्वव्याप्त निरवधि रही, शुभ्र वस्त्र सम्पृक्त।
सदा निनादित नेह से, स्रोत पयस्विनि सिक्त।।[2]

कवि श्यामलाल उपाध्याय ने अपने रचना संसार में भारतीय संस्कृति का खुलकर वर्णन किया है जिसमें माता-पिता का दर्जा संसार में सबसे बड़ा माना गया। क्योंकि सर्वप्रथम बालक के माता-पिता ही गुरु होते हैं उन्होंने माता-पिता के उपकार का वर्णन इस प्रकार किया -

माता-पिता न भूलना, चाहे जग संसार।
अनगिनत उपकार हैं, कभी न पाना पार।।"[3]

शिक्षक का दर्जा समाज में सर्वश्रेष्ठ दर्जा माना जाता है। शिक्षक उस मोमबती के समान है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाश देता है। शिक्षक अपने विषय का विशेषज्ञ होता है। जो हमेशा शिष्टाचार, नैतिकता, कर्तव्य आदि का पालन करता है ऐसे शिक्षक को सभी प्रणाम करते हैं। कवि ने अच्छे शिक्षक के गुणों का वर्णन बहुत सुंदर ढंग से किया जो इस प्रकार है:

संयत शिक्षक मन रचे, क्या से क्या कह जाय।
सबका मन वह जीतकर, जन-जन को मन भाय।।
अभिव्यक्ति अनुरूप हो, वह मन घर कर जाय।
शिक्षक अथवा छात्र हो, मनवांछित फल पाय।।
परिपक्व ज्ञान की, सदा सुयश ही देत।
इसके बदले में कभी, नहीं कहीं कुछ लेत।।"[4]

कवि का विचार है कि हमें राष्ट्र भक्त होना चाहिए। राष्ट्र भक्ति हमारी रोम-रोम में बसी हो। हमें सच्ची भावना से राष्ट्र के प्रति वफादार रहना चाहिए। हमें अपने कर्त्तव्य के प्रति जागरूथ होना चाहिए। क्योंकि राष्ट्र के प्रति चिंतन करना हमारा परम कर्त्तव्य माना गया है। इसी प्रकार से कवि श्यामलाल उपाध्याय जी ने समाज में राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाने का कार्य किया सभी के प्रति मंगलकामना थी -

सभी सुखी सानंद हो, सब हो स्वस्थ निरोग,
सबका मंगल हो सदा, क्षम से पायें भोग।
सबके निज कर्त्तव्य हों, विमुख सदा अपराध।
सुरक्षित अधिकार हों, पूजे मन की साध।।
न्याय तुला सर्वोपरि, निर्णय हो निष्पक्ष,
दण्डित हो अपराध तब, चाहे पक्ष-विपक्ष
पाठन राष्ट्रहित हो सदा, स्वार्थहीन हो सोच।
सभी बचाएँ देश को, कभी न आये लोच।।"[5]

हमें अपने राष्ट्र धर्म के प्रति जागरूक रहना चाहिए। भारत माता की लाज बचाना हमारा परम कर्त्तव्य बनता है, क्योंकि हम भारत-माता के सूपत है। हमें मेहनत जोर-शोर से करनी चाहिए। क्योंकि आज के इस आपाधापी युग में मानव स्वार्थी बनता जा रहा है उन्हें राष्ट्र की कोई चिंता नहीं वह फालतू की दुनिया में उलझा हुआ है इसी प्रकार कवि श्यामलाल उपाध्याय जी ने समाज में जो युवा वर्ग है उनको प्रेरणा देते हुए कहा है -

माता के उपकार है, कभी न पाए पार,
अपने बल पुरुषार्थ से, बने गले का हार
सम्भव कोई त्याग हो, मातृभूमि के काज
सदा सुरक्षित राष्ट्र हो, बनकर यह अधिराज
राष्ट्र चरित्र अमूल्य है, जन-जन जाने मोल
व्यक्ति समाज इसे कहें, महिमा राष्ट्र अमोल।।"[6]

कवि श्यामलाल उपाध्याय हिन्दी भाषा के सच्चे उपासक थे। उन्हें हिन्दी से गहरा प्रेम था। उन्होंने अपनी कविताओं में राष्ट्र भाषा हिन्दी का वर्चस्व बढ़ाया क्योंकि वे कहते हैं कि हम भारत माता की सन्तान है। हिन्दी हमारी मातृ भाषा है वह हिन्दुस्तान के माथे की बिन्दी है, हिन्दी की महिमा का गुणगान इस प्रकार से किया है -

जिसके भाषी अधिक जन बसते हैं उस देश
उसे राष्ट्रभाषा को सहज शारदा शेष
हिन्दी जैसे ओजले, लिखते जैसे आप
सहज रूप में जानते, मिटते मन के ताप
हिन्दी राष्ट्र समाज की, कर ले निज भर शक्ति
केवल इच्छा चाहिए और नहीं तो भक्ति।।[7]

कवि श्यामलाल उपाध्याय ने धर्म की महिमा का गुणगान किया है। वे कर्म को ही भगवान मानते है। अच्छे कर्म करोगे तो उसका मूल्यांकन होने पर परिणाम आपके सामने हाजिर होगा व बूरे कर्म का परिणाम हमेशा नकारात्मक ही होता है। वे कहते हैं, मानव मन को कर्म ही करता रहना चाहिए भारतीय होने पर कर्म हमारी नशों में बसा हुआ है। कर्म से आदर, सफलता, सम्मान आदि प्राप्त होता है -

कर्म सदा इस जगत में, सबका आदर पात्र,
इसकी सेवा गूँजती, सबकी बनी सुपात्र
मानव अनुपम जीव है, अखिल सृष्टि में एक।
इसके अगणित मूल्य हैं, करता कार्य अनेक।।
तन-मन-धन से कम्र कर, अर्पित हो प्रभु पास,
हानि लाभ से मुक्त हो, कर्म बने दासा।"[8]

गोधन हमारी भारतीय संस्कृति की पहचान है हमें गौ माता की पूजा करनी चाहिए। प्राचीन काल में सर्वप्रथम गाय माता की पूजा होती थी। अब धीरे-धीरे बदलाव आ गया। आज के इस आपाधापी युग में गौ माता की जगह-जगह हत्या हो रही है। यह मारे देश का दुर्भाग्य है इसके प्रति कवि ने जागरूकता का पाठ समाज को पढ़ाया वे कहते है -

गोधन से हो पूर्ण जब, धन होता है पूर्ण।
बिना गो सेवा कहीं, समझें सदा अपूर्ण।
गो पूजा संस्कृति चली, वर्षों से प्राचीन।
इसका अवमूल्यन हुआ, समझ हुई जब हीन।।
गो संस्कृति की प्राण है, संस्कृति की यह शक्ति।
इससे मन में उमड़ती, गो प्रति अनुपम शक्तियाँ।[9]

हमारे मानव जीवन में संस्कारों का बहुत महत्त्व होता है। जब शीशु का जन्म होता है तो मंगल गीत गाए जाते हैं। कर्णवेध संस्कार, नामकरण संस्कार, उपनयन संस्कार, चूड़ाकर्म संस्कार आदि। आज के इस अन्तरताना युग में इन संस्कारों को युवा वर्ग भूल गया। लेकिन हमें इनके महत्त्व को जाना चाहिए -

शिशु का जन्म ग्रहण रहा, परम हर्ष व्यापार।
सर्वोत्तम मंगल रहा, यह जीवन का सार।।
कर्ण वेध संस्कार है, शिशु का रक्षा कवच
नामकरण देता उसे, नाम प्रमाण अनिर्वच।।
चूड़ाकर्म जो छापता, वर्ग विशेष अबोध
उपनयन संस्कार से, द्विज संज्ञा का बोध।।"[10]

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि कवि श्यामलाल उपाध्याय जी ने अपनी काव्य रचनाओं में राष्ट्रीयता एवं सांस्कृतिक चेतना को अधिक महत्त्व दिया। जिसमें देश भक्ति, राष्ट्र प्रेम, मानव मूल्य, संस्कार आदि को समाज के सामने प्रस्तुत करने का सफल कार्य किया।

संदर्भ

1. कवि श्यामलाल उपाध्याय, नियति निसर्ग, पृ॰ 10
2. वही, पृ॰ 12
3. वही, पृ॰ 15
4. वही, पृ॰ 18
5. काव्य मन्दाकिनी, पृ॰ 31
6. वही, पृ॰ 37
7. भूदर्शन, पृ॰ 38
8. वही, पृ॰ 39
9. नियति न्यास, पृ॰ 11
10. वही, पृ॰ 13